अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

# हिन्दी साहित्य में आदिवासी वचारधारा

श्रीमती उमा चौधरी
न्यू होराइज़न कालेज

## सार तत्व

आदिवासी समाज व साहित्य में ना भ-नाल का रिश्ता है।आदिवासी समाज क्या है उसके मूल्य क्या हैं। आदिवासी साहित्य जानने से पहले जितना आदिवासी समाज को समझना जरुरी है उतना ही जरुरी है आदिवासी समाज को समझने के लए उनके वा चक साहित्य को जानना। आदिवासी साहित्य जीवनवादी साहित्य है। जहाँ तक साहित्य की वषयवस्तु का सवाल है तो आदिवासी साहित्य की शुरुवात ही जीवन से होती है प्रकृति से होती है और ये दोनों यथार्थ से जुड़े हैं। जब हम आदिवासी साहित्य की चर्चा करते हैं तो यह भी एक खुरदुरेपन से शुरु होता है। लोग पुछते हैं क आदिवासी साहित्य क्या है, इसमें कतना आकर्षण है, कतना सौंदर्य है, यह कब तक चलेगा और इसकी उम्र क्या होगी। इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है क जब तक समाज में जातीय वर्गीकरण या या समाज का वर्गीकरण होता रहेगा। इसकी उम्र भी लम्बी होती जाएगी। जब तक समाज में समरुपता नहीं आयेगी, तब तक आदिवासी जो वं चत समाज है अपने हक के लए लड़ता रहेगा।

## हिन्दी साहित्य में आदिवासी वचारधारा

जिस समाज में हम जीते है वह समाज हमें कैसी मान सकता देता है। बचपन से लेकर आज तक की समस्या को देखते हुए हमें कैसे जीना चाहिए हमारे समाज का जीवन कहाँ से आया, हमारे जीने का ढंग हम पर लादा हुआ है या कसी का दिया हुआ। इन सारे प्रश्नों और जिज्ञासाओं के साथ हमारी जिंदगी यदि कोई बदल सकता है तो वह साहित्य ही है उसी में हमारे वचारों को अ भव्यक्ति मलती है। आदिवासी साहित्य क्या है। आदिवासी संस्कृति , जिसमें मानवीय मूल्य हैं, को केन्द्र बिन्दु मानकर जो लखा जाता है, उसे आदिवासी साहित्य कहेंगे। आदिवासी साहित्य कभी द लत साहित्य या सवर्ण साहित्य का हिस्सा नहीं हो

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सकता क्यों क आदिवासी साहित्य और संस्कृति की अपनी अलग पहचान है।ऐसे में उनका साहित्य दूसरों का नहीं हो सकता।

आदिवासी समाज व साहित्य में ना भ-नाल का रिश्ता है।आदिवासी समाज क्या है उसके मूल्य क्या हैं। आदिवासी साहित्य जानने से पहले जितना आदिवासी समाज को समझना जरुरी है उतना ही जरुरी है आदिवासी समाज को समझने के लए उनके वा चक साहित्य को जानना। आदिवासी साहित्य जीवनवादी साहित्य है। जहाँ तक साहित्य की वषयवस्तु का सवाल है तो आदिवासी साहित्य की शुरुवात ही जीवन से होती है प्रकृति से होती है और ये दोनों यथार्थ से जुड़े हैं। जब हम आदिवासी साहित्य की चर्चा करते हैं तो यह भी एक खुरदुरेपन से शुरु होता है। लोग पुछते हैं क आदिवासी साहित्य क्या है, इसमें कतना आकर्षण है, कतना सौंदर्य है, यह कब तक चलेगा और इसकी उम्र क्या होगी। इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है क जब तक समाज में जातीय वर्गीकरण या या समाज का वर्गीकरण होता रहेगा। इसकी उम्र भी लम्बी होती जाएगी। जब तक समाज में समरुपता नहीं आयेगी, तब तक आदिवासी जो वं चत समाज है अपने हक के लए लड़ता रहेगा। लोग प्राय आदिवासी को या तो चोर-उचक्का मानते हैं अथवा जंगलों, पहाड़ो में रहने वाले जीव-जन्तु। उनका साहित्य जीवन की समस्याओं से जुड़ा है। आदिवासी वपरीत स्थितयों से संघर्षरत होकर सदियों से जीता आ रहा है। वह अपने अस्तित्व को ही नहीं, अपनी संस्कृति भाषा और जीवन शैली को मूल रुप में बरकरार रखते हुए , आवंछित परिवर्तन की पीड़ा झेलकर वांछित परिवर्तन को अपनाने से परहेज न करते हुए कायम है। उनके साहित्य में वह व्यक्तिगत कुंठा नहीं है जो मध्यम वर्गीय, गैर आदिवासी साहित्य में मलती है। उसमें जुल्म के खलाफ लड़ने की एक शक्ति है प्रकृति के साथ मलकर जीने की रहने की, वकास की कल्पना है संवाद है।

आदिवासी जब चलते है तो उनकी चाल में नृत्य होता है । जब वे बोलते हैं तो उनकी बोली में संगीत होता है। उनके साहित्य में जमीन से जुड़ी , धरती सी ठोस समस्याएँ हैं। आदिवासी साहित्य का यदि वकास करना है तो उनकी भाषा व संस्कृति को बचाना होगा। आदिवासी साहित्य की सबसे बड़ी समस्या यह है क अ धकांश आदिवासी लोग दूर-दराज के दुर्गम जंगलो पहाड़ो में बसते हैं। असली साहित्य वहीं होगा जो

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

आदमी और समाज की चन्ता करें। उसके सुख दुख को अ भव्यक्त करें। आदिवासी साहित्य की अवधारणा को लेकर तीन तरह के मत है –

(1) आदिवासी वषय पर लखा गया साहित्य आदिवासी साहित्य है।

(2) आदिवा सयों द्वारा लखा गया साहित्य आदिवासी साहित्य है।

(3) आदिवासी दर्शन के तत्वों वाला साहित्य ही आदिवासी साहित्य है।

पहली अवधारणा गैर-आदिवासी लेखकों की है परंतु समर्थन में कुछ आदिवासी लेखक भी हैं। दूसरी अवधारणा उन आदिवासी लेखकों और साहित्यकारों की है जो जन्मना और स्वानुभूति के आधार पर आदिवा सयों द्वारा लखे गये साहित्य को ही आदिवासी साहित्य मानते हैं। अंतिम और तीसरी अवधारणा उन आदिवासी लेखकों की है जो आदिवा सयत के तत्वों का निर्वाह करने वाले साहित्य को ही आदिवासी साहित्य के रुप में स्वीकार करते हैं।

भाषा की बात की जाए तो आदिवासी समाज के हर कबीले की अपनी-अपनी भाषा होती है। जिसके चलते व भन्न भाषा-भाषी आदिवा सयों के बीच परस्पर सम्पर्क नहीं हो पाता। उनके बीच सम्पर्क की बोल-चाल की कोई भाषा नहीं है। मान भी लया जाए क आदिवा सयों को वकास के लए शहरों की ओर जाना चाहिए ले कन क्या अंजान शहर उन्हे स्वीकार करता है। शहरों में भी उनकी पहचान असभ्य श्रेणी में होती है।आदिवासी साहित्य को अपने-अपने प्रदेश की भाषाओं के साहित्य के भाग के रुप में, राष्ट्र के साहित्य का हिस्सा होना है। आदिवासी की नयी पीढ़ी की अपनी जीवन और संस्कृति है। इस लए उनका अपना साहित्य कैसे नहीं होगा। उनकी साहित्य सृष्टि का दायित्व उन्हीं पर निर्भर है। दूसरों पर नहीं। आदिवासी की संवेदना क्षमता बरतने वाली लोक भाषा एक नहीं है, प्रत्येक कबीले की अपनी – अपनी अलग-अलग भाषाएँ हैं। बो लयाँ हैं, जो ल प रहित हैं। एक प्रदेश की अ धकांश जनता की भाषा, हिन्दी ही हमारी राष्ट्र भाषा है।आदिवा सयों को प्रादे शक भाषाएं और उनकी ल प सीखकर उन भाषाओं और ल प में अपनी भाषा और संस्कृति को प्रस्तुत करना है। लेखक ने नरक मसीहा नामक उपन्यास में आदिवा सयों का चत्रण बहुत ही दयनीय रुप में दिखाया गया है। उनके जीवन में कभी परिवर्तन नहीं दिखा है। कोई न कोई समस्या से वो लोग गुजरते आये हैं। आदिवासी साहित्य का यदि वकास करना है तो उनकी भाषा और संस्कृति को बचाना

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

होगा। उनकी शिक्षा को उन्हीं की सुविधानुसार उनके तरीके से उनके बीच ले जाने की जरुरत है। आदिवासी लेखकों की कृतियों के माध्यम से ऐसे सवाल आने चाहिए। आदिवासियों में भी अपने ही बीच के अनेक भाषा-भाषियों से संवाद के लिए एक लिंक भाषा की दरकरार है। ताकि वो मिलकर अपनी बात को उठा सके। दरकार है आदिवासी और गैर-आदिवासियों के बीच संवाद की ताकि समान विचारों के लोग उनके समर्थन में जुट सकें।आदिवासियों के बीच लोक साहित्य की एक परम्परा रही है अब इसकी कल्पना करें। कि अब क्या नहीं हो सकेगा। आदिवासी साहित्यकारों के लिए क्या भाषा, संस्कृति आदि की चुनौतियां हैं। इन्हें चुनौतियों के रुप में हमें लेना है, अन्यथा भ्रम फैलेंगे और जीवन-गन्धी यथार्थ एवं गम्भीर साहित्य का सृजन नहीं हो पाएगा।मन में छूआछूत की भावना को रखते हुए इधर-उधर घूमने पर आदिवासी जीवन की अंदरुनी परत, संस्कृति व भाषा को समझना व जानना असम्भव है।

आदिकाल से ही आदिवासी उर्वर मिट्टी में कृषि करने वाले थे। उन्होंने साहित्य एवं संस्कृति का पोषण किया लेकिन वे प्रबल संस्कृति के निष्ठुर आक्रमण से परास्त होकर जान बचाकर भाग गये। उन्होंने पहाड़ो एवं वनों में आश्रय लिया। जीवन को बनाए रखने के लिए सबसे पहले उन्हें प्रकृति से जूझना पड़ा, बाद में घुसपैठियों से भी। ऐसी स्थिति में किसी न किसी तरह जीवन सँवारते समय खोए पुराने दिनों की स्मृतियों को संजोकर वे अपने ढ़ग से गीत गाकर, कहानियां सुनाकर अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित करते रहे।आदिवासी लेखन विविधताओं से भरा हुआ है। मौखिक साहित्य की समृद्ध परंपरा का लाभ आदिवासी रचनाकारों को मिला है। आदिवासी साहित्य की उस तरह कोई विधा नहीं है, जिस तरह स्त्री साहित्य और दलित साहित्य की आत्मकथात्मक लेखन है। कविता, कहानी, उपन्यास,नाटक सभी प्रमुख विधाओं में आदिवासी और गैर-आदिवासी रचनाकारों ने आदिवासी जीवन समाज की प्रस्तुति की है। आदिवासी रचनाकारों ने आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व के संघर्ष में कविता को अपना मुख्य हथियार बनाया। आदिवासी लेखन में आत्मकथात्मक लेखन केन्द्रीय स्थान नहीं बन सका, क्यों कि स्वयं आदिवासी समाज आत्म से अधिक समूह में विश्वास करता है। अधिकांश आदिवासी समुदायों में काफी बाद तक भी निजी और निजता की धारणा घर नहीं कर पाई। परंपरा, संस्कृति, इतिहास से लेकर शोषण और उसका प्रतिरोध सब कुछ सामूहिक है। समूह की बात आत्मकथा में नहीं , जन कविता में ज्यादा अच्छे से व्यक्त हो सकती

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

है। यदि आपके साहित्य में संवेदना, मर्मस्प र्शता नहीं है, तो वह दोयम दर्जे का साहित्य माना जाएगा।ऐसा साहित्य कभी भी अपनी बात लोगों तक नहीं पहुँचाएगा। ना ही वह कभी मुख्य धारा में आएगा। हमारी पीढ़ी ऐसे पढ़े- लखे लोगों का जो अपनी अ भव्यक्ति की क्षमता के कारण समाज में अपनी बाद कह रहे हैं कर्तव्य बनता है क वे अगली पीढ़ी तैयार करें।

जब तक आदिवासी को अपना दुख व्यक्त करने का अवसर नहीं दिया जाता, जब तक उन्हें मातृभाषा में पढ़ाया नहीं जाता, तब तक वे ज्ञान- वज्ञान और तकनीकी शक्षा नहीं सीख सकते। दूसरी सबसे महत्व की बात यह भी है क हम उनकी कसी प्रकार की मदद भी नहीं कर सकते। इस लए उन्हें अपनी मातृभाषा में पढ़ने- लखने और सीखने का अवसर मलना चाहिए। एक प्रश्न यह भी है क आदिवासी साहित्य की मदद कैसे की जाए। उसकी उतनी मदद ही करनी चाहिए जितनी उसके लए जरुरी है। तारीफ उतनी ही करनी चाहिए, जितनी आवश्यक है।

**********